

रविवार 26 अप्रैल, 2026

विषय — मृत्यु के बाद की प्रक्रियामृत्यु के बाद की प्रक्रिया

स्वर्ण पाठ: भजन संहिता 17: 15

---

"परन्तु मैं तो धर्मी होकर तेरे मुख का दर्शन करूंगा जब मैं जानूंगा तब तेरे स्वरूप से सन्तुष्ट हूंगा॥"

---

उत्तरदायी अध्ययन: इफिसियों 4: 1-3, 13, 22-24

इफिसियों 5 : 14

- 1 सोमैं जो प्रभु में बन्धुआ हूं तुम से बिनती करता हूं, कि जिस बुलाहट से तुम बुलाए गए थे, उसके योग्य चाल चलो।
- 2 अर्थात् सारी दीनता और नम्रता सहित, और धीरज धरकर प्रेम से एक दूसरे की सह लो।
- 3 और मेल के बन्ध में आत्मा की एकता रखने का यत्न करो।
- 13 जब तक कि हम सब के सब विश्वास, और परमेश्वर के पुत्र की पहिचान में एक न हो जाएं, और एक सिद्ध मनुष्य न बन जाएं और मसीह के पूरे डील डौल तक न बढ़ जाएं।
- 22 कि तुम अगले चालचलन के पुराने मनुष्यत्व को जो भरमाने वाली अभिलाषाओं के अनुसार भ्रष्ट होता जाता है, उतार डालो।
- 23 और अपने मन के आत्मिक स्वभाव में नये बनते जाओ।
- 24 और नये मनुष्यत्व को पहिन लो, जो परमेश्वर के अनुसार सत्य की धार्मिकता, और पवित्रता में सृजा गया है॥
- 14 इस कारण वह कहता है, हे सोने वाले जाग और मुर्दों में से जी उठ; तो मसीह की ज्योति तुझ पर चमकेगी॥

पाठ उपदेश

## बाइबल

1. भजन संहिता 31: 23 (से 2nd ,)

- 23 हे यहोवा के सब भक्तों उससे प्रेम रखो! यहोवा सच्चे लोगों की तो रक्षा करता है, परन्तु जो अहंकार करता है, उसको वह भली भांति बदला देता है।

2. यूहन्ना 2: 4 (से यह वाणी)

3.

- 4 ईश ने कहा...

4. यूहन्ना 10: 10 (में), 27-29

- 10 मैं इसलिये आया कि वे जीवन पाएं, और बहुतायत से पाएं

---

इस बाइबल पाठ को प्लेनफील्ड क्रिश्चियन साइंस चर्च, इंडिपेंडेंट द्वारा तैयार किया गया था। यह किंग जेम्स बाइबल से स्क्रिपचरल कोटेशन से बना है और मैरीक बकरी एड्डी ने क्रिश्चियन साइंस पाठ्यपुस्तक विज्ञान और स्वास्थ्य से कृंजी के साथ शास्त्र के लिए सहसंबद्ध मार्ग लिया है।

- 27 मेरी भेड़ें मेरा शब्द सुनती हैं, और मैं उन्हें जानता हूँ, और वे मेरे पीछे पीछे चलती हैं।  
28 और मैं उन्हें अनन्त जीवन देता हूँ, और वे कभी नाश न होंगी, और कोई उन्हें मेरे हाथ से छीन न लेगा।  
29 मेरा पिता, जिस ने उन्हें मुझ को दिया है, सब से बड़ा है, और कोई उन्हें पिता के हाथ से छीन नहीं सकता।

**5. यूहन्ना 11: 1, 3, 4, 6, 7, 11 (हमारा)-15, 20-26 (से .), 34 (कहाँ), 38-44**

- 1 मरियम और उस की बहिन मारथा के गांव बैतनिय्याह का लाजर नाम एक मनुष्य बीमार था।  
3 सो उस की बहिनों ने उसे कहला भेजा, कि हे प्रभु, देख, जिस से तू प्रीति रखता है, वह बीमार है।  
4 यह सुनकर यीशु ने कहा, यह बीमारी मृत्यु की नहीं, परन्तु परमेश्वर की महिमा के लिये है, कि उसके द्वारा परमेश्वर के पुत्र की महिमा हो।  
6 सो जब उस ने सुना, कि वह बीमार है, तो जिस स्थान पर वह था, वहां दो दिन और ठहर गया।  
7 फिर इस के बाद उस ने चेलों से कहा, कि आओ, हम फिर यहूदिया को चलें।  
11 कि हमारा मित्र लाजर सो गया है, परन्तु मैं उसे जगाने जाता हूँ।  
12 तब चेलों ने उस से कहा, हे प्रभु, यदि वह सो गया है, तो बच जाएगा।  
13 यीशु ने तो उस की मृत्यु के विषय में कहा था: परन्तु वे समझे कि उस ने नींद से सो जाने के विषय में कहा।  
14 तब यीशु ने उन से साफ कह दिया, कि लाजर मर गया है।  
15 और मैं तुम्हारे कारण आनन्दित हूँ कि मैं वहां न था जिस से तुम विश्वास करो, परन्तु अब आओ, हम उसके पास चलें।  
20 सो मारथा यीशु के आने का समचार सुनकर उस से भेंट करने को गई, परन्तु मरियम घर में बैठी रही।  
21 मारथा ने यीशु से कहा, हे प्रभु, यदि तू यहां होता, तो मेरा भाई कदापि न मरता।  
22 और अब भी मैं जानती हूँ, कि जो कुछ तू परमेश्वर से मांगेगा, परमेश्वर तुझे देगा।  
23 यीशु ने उस से कहा, तेरा भाई जी उठेगा।  
24 मारथा ने उस से कहा, मैं जानती हूँ, कि अन्तिम दिन में पुनरुत्थान के समय वह जी उठेगा।  
25 यीशु ने उस से कहा, पुनरुत्थान और जीवन मैं ही हूँ, जो कोई मुझ पर विश्वास करता है वह यदि मर भी जाए, तौभी जीएगा।  
26 और जो कोई जीवता है, और मुझ पर विश्वास करता है, वह अनन्तकाल तक न मरेगा, क्या तू इस बात पर विश्वास करती है?  
38 यीशु मन में फिर बहुत ही उदास होकर कब्र पर आया, वह एक गुफा थी, और एक पत्थर उस पर धरा था।  
39 यीशु ने कहा; पत्थर को उठाओ: उस मरे हुए की बहिन मारथा उस से कहने लगी, हे प्रभु, उस में से अब तो दुर्गंध आती है क्योंकि उसे मरे चार दिन हो गए।  
40 यीशु ने उस से कहा, क्या मैं ने तुझ से न कहा था कि यदि तू विश्वास करेगी, तो परमेश्वर की महिमा को देखेगी।  
41 तब उन्होंने उस पत्थर को हटाया, फिर यीशु ने आंखें उठाकर कहा, हे पिता, मैं तेरा धन्यवाद करता हूँ कि तू ने मेरी सुन ली है।  
42 और मैं जानता था, कि तू सदा मेरी सुनता है, परन्तु जो भीड़ आस पास खड़ी है, उन के कारण मैं ने यह कहा, जिस से कि वे विश्वास करें, कि तू ने मुझे भेजा है।  
43 यह कहकर उस ने बड़े शब्द से पुकारा, कि हे लाजर, निकल आ।

44 जो मर गया था, वह कफन से हाथ पांव बन्धे हुए निकल आया और उसका मुंह अंगोछे से लिपटा हुआ तें यीशु ने उन से कहा, उसे खोलकर जाने दो॥

## 6. यूहन्ना 17: 1-3

- 1 यीशु ने ये बातें कहीं और अपनी आंखे आकाश की ओर उठाकर कहा, हे पिता, वह घड़ी आ पहुंची, अपने पुत्र की महिमा कर, कि पुत्र भी तेरी महिमा करे।
- 2 क्योंकि तू ने उस को सब प्राणियों पर अधिकार दिया, कि जिन्हें तू ने उस को दिया है, उन सब को वह अनन्त जीवन दे।
- 3 और अनन्त जीवन यह है, कि वे तुझ अद्वैत सच्चे परमेश्वर को और यीशु मसीह को, जिसे तू ने भेजा है, जाने।

## 7. यूहन्ना 5: 24, 25

- 24 मैं तुम से सच सच कहता हूं, जो मेरा वचन सुनकर मेरे भेजने वाले की प्रतीति करता है, अनन्त जीवन उसका है, और उस पर दंड की आज्ञा नहीं होती परन्तु वह मृत्यु से पार होकर जीवन में प्रवेश कर चुका है।
- 25 मैं तुम से सच सच कहता हूं, वह समय आता है, और अब है, जिस में मृतक परमेश्वर के पुत्र का शब्द सुनेंगे, और जो सुनेंगे वे जीएंगे।

## 8. रोमियो 13: 11 (अब यह)

- 11 ... इसलिये कि अब तुम्हारे लिये नींद से जाग उठने की घड़ी आ पहुंची है, क्योंकि जिस समय हम ने विश्वास किया था, उस समय के विचार से अब हमारा उद्धार निकट है।

## 9. 1 कुरिन्थियों 15: 26, 51-54

- 26 सब से अन्तिम बैरी जो नाश किया जाएगा वह मृत्यु है।
- 51 देखे, मैं तुम से भेद की बात कहता हूं: कि हम सब तो नहीं सोएंगे, परन्तु सब बदल जाएंगे।
- 52 और यह क्षण भर में, पलक मारते ही पिछली तुरही फूंकते ही होगा: क्योंकि तुरही फूंकी जाएगी और मुर्दे अविनाशी दशा में उठाए जाएंगे, और हम बदल जाएंगे।
- 53 क्योंकि अवश्य है, कि यह नाशमान देह अविनाश को पहिन ले, और यह मरनहार देह अमरता को पहिन ले।
- 54 और जब यह नाशमान अविनाश को पहिन लेगा, और यह मरनहार अमरता को पहिन लेगा, तक वह वचन जो लिखा है, पूरा हो जाएगा, कि जय ने मृत्यु को निगल लिया।

## 10. 1 पतरस 1: 3, 4

- 3 हमारे प्रभु यीशु मसीह के परमेश्वर और पिता का धन्यवाद दो, जिस ने यीशु मसीह के हुआओं में से जी उठने के द्वारा, अपनी बड़ी दया से हमें जीवित आशा के लिये नया जन्म दिया।
- 4 अर्थात् एक अविनाशी और निर्मल, और अजर मीरास के लिये।

## विज्ञान और स्वास्थ्य

### 1. 246: 27 (ज़िंदगी)-31

जीवन हमेशा रहने वाला है। हमें यह पता लगाना चाहिए, और इसका प्रदर्शन शुरू करना चाहिए। जीवन और अच्छाई अमर हैं। तो आइए हम अपने अस्तित्व के बारे में अपने विचारों को उम्र और बर्बादी के बजाय सुंदरता, ताज़गी और निरंतरता के हिसाब से ढालें।

### 2. 75: 12-20

यीशु ने लाज़र के बारे में कहा: "हमारा दोस्त लाज़र सो रहा है; लेकिन मैं जाता हूँ, ताकि उसे नींद से जगा सकूँ।" यीशु ने लाज़र को यह समझकर ठीक किया कि लाज़र कभी मरा नहीं था, न कि यह मानकर कि उसका शरीर मर गया था और फिर ज़िंदा हो गया था। अगर यीशु मानते कि लाज़र अपने शरीर में ज़िंदा था या मर गया था, तो गुरु भी उसी विश्वास के लेवल पर होते जैसे शरीर को दफ़नाने वाले लोग होते, और वह उसे ज़िंदा नहीं कर पाते।

### 3. 427: 13-19, 29-14

मौत इस सपने का एक और हिस्सा है कि ज़िंदगी मैटेरियल हो सकती है। साइंस में कोई भी चीज़ होने के तालमेल में दखल नहीं दे सकती और न ही इंसान के होने को खत्म कर सकती है। हड्डी टूटने या शरीर के गिलोटिन होने के बाद भी इंसान वैसा ही रहता है जैसा पहले था। अगर इंसान को मौत पर कभी काबू नहीं पाना है, तो धर्मग्रंथ क्यों कहते हैं, "आखिरी दुश्मन जिसे खत्म किया जाएगा वह मौत है"?

मौत के सपने को मन को यहीं या बाद में काबू करना होगा। सोच अपनी मैटेरियल घोषणा, "मैं मर गया हूँ," से जागेगी, ताकि सच के इस तुरही-शब्द को पकड़ सके, "कोई मौत नहीं है, कोई इनएक्शन नहीं है, बीमार एक्शन नहीं है, ओवरएक्शन नहीं है, न ही रिएक्शन है।"

ज़िंदगी असली है, और मौत एक भ्रम है। जीसस के तरीके से आत्मा के फैक्ट्स का एक डेमोंस्ट्रेशन मैटेरियल सेंस के अंधेरे विज्ञान को तालमेल और अमरता में बदल देता है। इस सबसे बड़े पल में इंसान का प्रिविलेज हमारे मास्टर के शब्दों को साबित करना है: "अगर कोई इंसान मेरी बात मानेगा, तो वह कभी मौत नहीं देखेगा।" झूठे भरोसे और भौतिक सबूतों के बारे में सोचना बंद कर देना ताकि होने की आध्यात्मिक सच्चाई सामने आ सके,—यही वह बड़ी कामयाबी है जिससे हम झूठ को दूर भगा देंगे और सच को जगह देंगे। इस तरह हम सच में मंदिर या शरीर बना सकते हैं, "जिसे बनाने वाला और बनाने वाला भगवान है।"

### 4. 46: 20-24

मौत जैसी लगने वाली चीज़ के बाद भी जीसस की शारीरिक हालत में कोई बदलाव नहीं आया, और उसके बाद वे सभी सांसारिक हालात से ऊपर उठ गए; और इसी खुशी ने उनके स्वर्ग जाने को समझाया, और कब्र के बाद उनकी एक मुश्किल और बढ़ती हुई हालत को साफ़ तौर पर दिखाया।

### 5. 49: 21-25

उन्हें यह साबित करना था कि मसीह भौतिक परिस्थितियों के अधीन नहीं है, बल्कि वह इंसानी गुस्से की पहुँच से ऊपर है, और सत्य, जीवन और प्रेम के द्वारा पाप, बीमारी, मृत्यु और कब्र पर विजय पाने में सक्षम है।

## 6. 409: 27-3

हमें यह कहने का कोई हक नहीं है कि ज़िंदगी अभी मैटर पर निर्भर है, लेकिन मौत के बाद उस पर निर्भर नहीं रहेगी। हम यहाँ ज़िंदगी के साइंस की अज्ञानता में अपने दिन नहीं बिता सकते, और यह उम्मीद नहीं कर सकते कि कब्र के पार इस अज्ञानता का कोई इनाम मिलेगा। मौत हमें अज्ञानता के बदले में सुकून देने वाला और अमर नहीं बनाएगी। अगर हम यहाँ क्रिश्चियन साइंस पर ध्यान नहीं देते, जो स्पिरिचुअल और हमेशा रहने वाला है, तो हम आगे स्पिरिचुअल ज़िंदगी के लिए तैयार नहीं होंगे।

## 7. 290: 3-10, 16-25

अगर इंसान के होने का प्रिंसिपल, नियम और सबूत, मौत के आने से पहले ज़रा भी नहीं समझा जाता, तो वे उस एक अनुभव की वजह से ज़िंदगी के पैमाने पर स्पिरिचुअली ऊपर नहीं उठेंगे, बल्कि बदलाव से पहले की तरह ही मैटीरियल बने रहेंगे, और ज़िंदगी के स्पिरिचुअल मतलब के बजाय मैटीरियल तरीके से और मतलबी और घटिया इरादों से खुशी ढूँढते रहेंगे।

अगर मौत नाम के बदलाव ने पाप, बीमारी और मौत में यकीन खत्म कर दिया होता, तो खुशी खत्म होने के पल में मिल जाती, और हमेशा के लिए पक्की हो जाती; लेकिन ऐसा नहीं है। परफेक्शन सिर्फ परफेक्शन से ही मिलता है। जो लोग गलत हैं, वे तब तक गलत ही रहेंगे, जब तक कि डिवाइन साइंस में क्राइस्ट, यानी सच, सारी नासमझी और पाप को खत्म नहीं कर देते।

मौत के पल में हम पर जो पाप और गलतियाँ हावी हो जाती हैं, वे उसी पल खत्म नहीं होतीं, बल्कि इन गलतफहमियों के खत्म होने तक बनी रहती हैं।

## 8. 291: 12-13

दुनिया की मुक्ति तरक्की और प्रोबेशन पर निर्भर है, और उनके बिना नहीं मिल सकती।

## 9. 296: 4 (प्रगति)-13

तरक्की अनुभव से पैदा होती है। यह नश्वर इंसान का परिपक्व होना है, जिससे नश्वर को छोड़कर अमरता आती है। चाहे यहाँ हो या बाद में, दुख या साइंस को जीवन और मन से जुड़े सभी भ्रमों को खत्म करना होगा, और भौतिक समझ और खुद को फिर से बनाना होगा। पुराने इंसान को उसके कामों के साथ छोड़ देना चाहिए। कोई भी कामुक या पापी चीज़ अमर नहीं है। झूठी भौतिक समझ और पाप की मौत, न कि ऑर्गेनिक चीज़ों की मौत, इंसान और जीवन को दिखाती है, जो एक जैसा, असली और हमेशा रहने वाला है।

## 10. 76 : 6-17, 26-31

जब अस्तित्व को समझा जाएगा, तो जीवन को न तो भौतिक और न ही सीमित, बल्कि अनंत माना जाएगा— भगवान के रूप में, यूनिवर्सल अच्छाई के रूप में; और यह विश्वास कि जीवन, या मन, कभी सीमित रूप में था, या

बुराई में अच्छाई, खत्म हो जाएगा। तब यह समझा जाएगा कि आत्मा कभी भी पदार्थ में नहीं आई और इसलिए कभी भी पदार्थ से नहीं बनी। जब आध्यात्मिक अस्तित्व और भगवान की समझ तक पहुँच जाता है, तो इंसान पदार्थ से बातचीत नहीं कर सकता; न ही वह उसके पास लौट सकता है, ठीक वैसे ही जैसे एक पेड़ अपने बीज के पास नहीं लौट सकता। न ही इंसान शरीर जैसा लगेगा, बल्कि वह एक व्यक्तिगत चेतना होगा, जिसे दिव्य आत्मा पदार्थ के बजाय विचार के रूप में पहचानेगी।

अस्तित्व की यह स्थिति वैज्ञानिक और बरकरार है,—एक पूर्णता जिसे केवल वही लोग पहचान सकते हैं जिन्हें दिव्य विज्ञान में क्राइस्ट की अंतिम समझ है। मृत्यु इस अस्तित्व की स्थिति को कभी भी जल्दी नहीं ला सकती, क्योंकि अमरता के प्रकट होने से पहले मृत्यु को जीतना होगा, उसके आगे झुकना नहीं होगा।

## 11. 254: 16-23

इंद्रियों के समय में, मौत नाम के बदलाव से पहले पूरी तरह से क्रिश्चियन साइंस हासिल नहीं किया जा सकता, क्योंकि हमारे पास यह दिखाने की ताकत नहीं है कि हम क्या नहीं समझते। लेकिन इंसान को खुद को समझाना होगा। यह काम भगवान हमसे आज प्यार से स्वीकार करने और जितनी जल्दी हो सके भौतिक चीज़ों को छोड़ने और आध्यात्मिक चीज़ों पर काम करने की मांग करता है जो बाहरी और वास्तविक चीज़ों को तय करती हैं।

## 12. 492: 11-12

इस तरह तरक्की आखिरक रसारी गलतियों को खत्म कर देगी, और अमरता को सामने लाएगी।

### दैनिक कर्तव्यों

मैरी बेकर एड्डी द्वारा

### दैनिक प्रार्थना

प्रत्येक दिन प्रार्थना करने के लिए इस चर्च के प्रत्येक सदस्य का कर्तव्य होगा: "तुम्हारा राज्य आओ;" ईश्वरीय सत्य, जीवन और प्रेम के शासन को मुझमें स्थापित करो, और मुझ पर शासन करो; और तेरा वचन सभी मनुष्यों के स्नेह को समृद्ध कर सकता है, और उन पर शासन करो!

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 4

### उद्देश्यों और कृत्यों के लिए एक नियम

न तो दुश्मनी और न ही व्यक्तिगत लगाव मदर चर्च के सदस्यों के उद्देश्यों या कृत्यों को लागू करना चाहिए। विज्ञान में, दिव्य प्रेम ही मनुष्य को नियंत्रित करता है; और एक क्रिश्चियन साइंटिस्ट प्यार की मीठी

सुविधाओं को दर्शाता है, पाप में डांटने पर, सच्चा भाईचारा, परोपकार और क्षमा में। इस चर्च के सदस्यों को प्रतिदिन ध्यान रखना चाहिए और प्रार्थना को सभी बुराईयों से दूर करने, भविष्यद्वाणी, न्याय करने, निंदा करने, परामर्श देने, प्रभावित करने या गलत तरीके से प्रभावित होने से बचाने के लिए प्रार्थना करनी चाहिए।

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 1

### कर्तव्य के प्रति सतर्कता

इस चर्च के प्रत्येक सदस्य का यह कर्तव्य होगा कि वह प्रतिदिन आक्रामक मानसिक सुझाव से बचाव करे, और भूलकर भी ईश्वर के प्रति अपने कर्तव्य की उपेक्षा नहीं करनी चाहिए, अपने नेता और मानव जाति के लिए। उनके कामों से उन्हें आंका जाएगा, — और वह उचित या निंदनीय होगा।

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 6